केवल आन्तरिक वितरण हेतु

परिसर समाचार

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

वर्ष : 3, अंक : 20 पाक्षिक 16–30 सितम्बर, 2011

कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव एवं अनुकूलन पर कार्यशाला आयोजित

दिनांक 17 सितम्बर, 2011 को विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में 'कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव एवं अनुकूलन' विषय पर दो–दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी। उद्घाटन सत्र के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी. एस. बिष्ट के अलावा राष्ट्रीय प्राध्यापक डा. टी.सी. ठाकुर; कार्यवाहक अधिष्ठाता, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, डा. एच. एम. अग्रवाल; सचिव, उत्तराखण्ड विकास संस्थान (यू.डी.आई.), श्री तेज सिंह भण्डारी; निदेशक, पी.ए.आई.आर.वी.आई., श्री अजय के. झा; नेपाल नेशनल वेलफेयर एसोसिएशन के निदेशक श्री अशोक विक्रम जैना; तथा निदेशक, संचार डा. वीर सिंह उपस्थित थे। इस अवसर कुलपति डा. बिष्ट ने कहा कि कृषि उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का बहुत ज्यादा असर पड़ रहा है। डा. बिष्ट ने जलवायु परिवर्तन के लिए लगातार बढ़ती जनसंख्या, तीव्र गति से बढ़ रहा प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध प्रयोग को जिम्मेवार ठहराया। उनका कहना था कि उक्त कारणों से पारिस्थितिकीय संरचना बिगड़ती जा रही है जिसका सीधा असर कृषि पर पड़ रहा है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि 2050 तक हमारे देश की जनसंख्या 170 करोड़ हो जायेगी जिसके भरण–पोषण के लिए हमें सीमित जमीन से ही खाद्यान्न उत्पन्न करने होंगे। डा. टी.सी. ठाकुर का कहना था कि स्वतंत्रता के बाद हरित क्रांति के माध्यम से हमने अन्नोत्पादन में बढ़ोत्तरी की है लेकिन यह संतोष जनक नहीं है। इस क्रांति के बाद द्वितीय हरित क्रांति की अवधारणा पर युद्व स्तर पर कार्य करने की जरूरत है जिसमें पहाड़ी कृषि, कृषि मशीनरी तथा मत्स्य पालन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। उनका कहना था कि इस क्रांति के लिए मिट्टी, जल तथा खाद का प्रबंधकीय संयोजन करना जरूरी है ताकि भरपूर उत्पादकता के साथ–साथ पर्यावरण भी सुरक्षित रह सके।

यू.डी.आई. के सचिव श्री भण्डारी ने इस कार्यशाला में आई विभिन्न संस्थाओं के कार्यों तथा पर्यावरण सुरक्षा हेतु उनकी जिम्मेदारियों का व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने उत्तराखण्ड में बीज तथा खाद को लेकर किसानों की समस्या पर सभा का ध्यान आकर्षित किया। नेपाल से आये श्री अशोक विक्रम जैना ने अपने देश में कृषि तथा पर्यावरण समस्याओं पर वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया। उनका कहना था कि भारत प्रारम्भ से ही नेपाल का मार्गदर्शन कर रहा है और कृषि के क्षेत्र में भी उसे भारत से बड़ी उम्मीदें है। उन्होंने भविष्य में नेपाली कृषकों के प्रशिक्षण हेतु पंतनगर विश्वविद्यालय से सहायता की मंशा व्यक्त की। श्री झा ने अपनी संस्था का परिचय देते हुए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उठ रहे जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर व्याख्यान दिया। उनका कहना था कि एक तरफ तो जलवायु परिवर्तन का असर हमारी कृषि पर हो रहा है, जबकि दूसरी तरफ हमारी खेती विदेशी कम्पनियों से पूरी तरह से प्रभावित होती रही है। पर्यावरणविद् तथा निदेशक संचार डा. वीर सिंह कहना था कि यदि पारिस्थितिक तंत्र को बचाना है तो सबसे पहले मिट्टी की संरचना का संरक्षण करना होगा। उन्होंने जैव विविधता के संरक्षण हेतु प्रति व्यक्ति को जागरूक रहने की बात कही। डा. सिंह ने कहा कि पहाड़ी जीवन तथा वहां की खेती में सामुदायिक सम्पत्ति संसाधन की झलक मिलती है जिसके तहत वहां के लोग बीज तथा वन संरक्षण में महत्ती भूमिका निभा रहे हैं जोकि पर्यावरण सुरक्षा हेतु अति आवश्यक है। इस कार्यशाला के आयोजक उत्तरांचल विकास संस्थान, इंसाफ उत्तराखण्ड, सुन्दर ट्रस्ट साई फाउन्डेशन, सारस, पैरवी, नई दिल्ली, इण्डो नेपाल ज्वाइंट फोरम, प्रगतिशील सामाजिक संस्था नैनीताल, ऑक्सेम इण्डिया, सिकोईडिकोन जयपुर, जन जागृति सेवा समिति थे।

व्यावसायिक औद्यानिकी पर चार–दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

दिनांक 19–22 सितम्बर, 2011 तक प्रसार शिक्षा निदेशालय में स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा 'व्यावसायिक औद्यानिकी' विषय पर एक चार दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में राज्य के विभिन्न जनपदों से आये उद्यान विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। चार दिवसीय प्रशिक्षण समारोह के समापन के दौरान निदेशक, समेटी–उत्तराखण्ड, डा. वाई. पी.एस. डबास ने प्रशिक्षण की महत्ता पर बल डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में हो रहे कृषि आधारित नए अनुसंधानों को सम्बन्धित अधिकारियों व किसानों तक पहुंचाना अति आवश्यक है। इसी के अंतर्गत प्रतिभागियों को पत्थरचट्टा स्थित उद्यान अनुसंधान केन्द्र के भ्रमण द्वारा आम/अमरूद की सघन बागवानी का बगीचा दिखा कर इस नई तकनीकी से अवगत कराया गया, जिससे कम क्षेत्रफल से कम समय में अधिक मात्रा में अच्छे गुणवत्ता वाले फल प्राप्त किए जा सकते हैं। निदेशक, प्रसार शिक्षा ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण सेब की फसल बहुत सीमित रह गई है। अतः उन्होंने कम द्रुतशीतन तापमान पर उगाए जाने वाली सेब की नई किस्म के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। पहाड़ों पर उत्पादित की जाने वाली नाशपाती का बाजार अच्छा न होने के कारण किसानों को नुकसान हो रहा है। अतः डा. डबास ने सुझाव दिया कि इसकी जगह किसानों को चुसकी, बब्बू गोशा आदि उत्तम गुणवत्ता वाली किस्मों की नाशपाती उगानी चाहिए जिसकी बाजार में अच्छी मांग है। उन्होंने बताया कि किसानों को गुणवत्तायुक्त पौध (प्लान्टिंग मैटीरियल) की जानकारी होना बहुत आवश्यक है, वरना 10–12 वर्ष बाद किसानों को इससे होने वाले नुकसान का पता लगता है। अंत में सभी प्रतिभागियों एवं प्रशिक्षणकर्ताओं का धन्यवाद देते हुए डा. डबास ने आशा व्यक्त की कि कृषि द्वारा विकसित भारत का सपना साकार करने में सभी प्रतिभागी अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे और प्रशिक्षण द्वारा अर्जित ज्ञान को सम्बन्धित किसानों तक पहुंचाएंगे। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण साहित्य एवं प्रमाण–पत्र भी वितरित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'व्यावसायिक औद्यानिकी' पर विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा उपोष्ण व शीतोषण जलवायु हेतु उपयुक्त फलों की खेती, फल वृक्षों में पोषक तत्व व सिंचाई प्रबन्धन एवं उनकी कमी से होने वाले रोग, पादप वृद्वि नियामकों की उपयोगिता, सधाई एवं कटाई–छंटाई, पुराने बागों का जीर्णोद्धार, ड्रिप–फर्टीगेशन, कीट, रोग एवं उनका प्रबन्धन, पौध प्रवर्धन की उपयुक्त विधियाँ, तुड़ाई पूर्व एवं उपरान्त फल गुणवत्ता प्रबन्धन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, व्यावसायिक औद्यानिकी के अन्तर्गत अर्न्तफसलीय खेती आदि विषयों पर व्याख्यान दिए गए। चार–दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को उद्यान अनुसंधान केन्द्र, पत्थरचट्टा एवं एटिक का भ्रमण कराया गया व फल वृक्षों में पौध प्रबन्धन पर प्रदर्शन दिखाये गये तथा प्रयोगात्मक अभ्यास भी कराया गया। सभी प्रतिभागियों ने अपने–अपने क्षेत्र के फलों की फसलों में होने वाले रोगों व अन्य समस्याओं के बारे में सम्बन्धित विशेषज्ञों को बताया व उनके निदान जाने। आजकल कीटनाशक दवाओं के बढ़ते प्रयोग, फल सब्जियों को पकाने हेतु प्रयोग की जाने वाली दवाओं/रसायनों के प्रयोग व उनके दुष्परिणामों के बारे में भी प्रतिभागियों को परिचित कराया गया व उनसे बचने के उपाय भी बताए गये। प्रशिक्षण में जो कीटनाशक सरकार द्वारा निषेध कर दिए गए हैं उन्हें न प्रयोग करने की सलाह दी गई। उपरोक्त प्रशिक्षण के सुचारू रूप से संचालन में डा. राम जी मौर्य, विषय वस्तु विशेषज्ञ; डा. बी.वी. सिंह, कनिष्ठ वैज्ञानिक; डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो; एवं डा. भावना गोयल, वरिष्ठ शोध अध्येता की सक्रिय भूमिका रही।

किसान मेले में विश्वविद्यालय द्वारा दो हजार कुन्तल से अधिक रबी फसलों के बीजों को उपलब्ध कराने की योजना

दिनांक 22 सितम्बर, 2011 को कुलपति की अध्यक्षता में आयोजित किसान मेला सलाहकार समिति की बैठक में आगामी 12 से 15 अक्टूबर, 2011 तक आयोजित किये जाने वाले 90वें 'अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी' में विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों एवं विश्वविद्यालय फार्म द्वारा रबी फसलों का दो हजार कुन्तल से अधिक बीज उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। ये प्रमाणित एवं आधारीय बीज विश्वविद्यालय के फसल अनुसंधान केन्द्र, बीज उत्पादन केन्द्र एवं विश्वविद्यालय फार्म द्वारा उत्पादित रबी की प्रमुख फसलों जैसे गेहूँ, चना, मटर, जौ, मसूर, तोरिया एवं सरसों के होंगे। इनके अतिरिक्त सब्जी अनुसंधान केन्द्र द्वारा उत्पादित विभिन्न सब्जियों के 6 हजार किग्रा. से अधिक बीज, आदर्श पुष्प उत्पादन केन्द्र द्वारा उत्पादित विभिन्न पुष्पों के बीज एवं पौध, उद्यान अनुसंधान केन्द्र द्वारा तैयार किये गये आम, लीची, अमरूद, नींबू, पपीता इत्यादि फलों के पौधे भी मेले में विक्रय हेतु उपलब्ध होंगे। साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निजी कम्पनियों एवं निगमों द्वारा भी उन्नतशील बीजों की बिक्री की जायेगी जिनकी

गुणवत्ता की जांच के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों पर खरीफ की प्रमुख फसलों जैसे धान, मक्का, अरहर, मूंग, उर्द, सोयाबीन आदि की अधिक उपज देने वाली उन्नतशील प्रजातियों की वैज्ञानिक पद्धति से लगाये गये प्रदर्शनों को भी किसान मेले में आने वाले कृषकों को दिखाया जायेगा। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि मेले में पानी, सफाई, शौचालय इत्यादि की व्यवस्था पर पूरा ध्यान दिया जायेगा तथा किसानों हेतु कम मूल्य के खाने के पैकेट भी उपलब्ध कराये जायेंगे। खाने–पीने के स्टालों पर सफाई एवं गुणवत्ता की जांच की व्यवस्था भी की जायेगी तथा यह सही न पाये जाने पर स्टाल को बिक्री नहीं करने दी जायेगी। बैठक का संचालन निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास ने किया जिन्होंने प्रारम्भ में मेले के लिए की जा रही तैयारियों एवं व्यवस्थाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

भारतीय कृि ा अनुसंधान परि ाद की टीम द्वारा खरपतवार अनुसंधान परियोजना की समीक्षा

दिनांक 21–23 सितम्बर, 2011 तक सस्य विज्ञान विभाग में खरपतवार पर चल रही अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की समीक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा डा. एस.सी. मुद्गल की अध्यक्षता में गठित उच्च स्तरीय पंचवार्षिक समीक्षा टीम (क्यू.आर.टी.) द्वारा की गयी। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. आर.पी. दूबे ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। यह परियोजना पंतनगर के अतिरिक्त पालमपुर, लुधियाना एवं हिसार कृषि विश्वविद्यालय में भी चल रही है। विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने टीम के साथ अपने बैठक में विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी देते हुए 'इण्टरनेशनल स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर', गाजर घास जागरूकता एवं प्रबंधन अभियान, विद्यार्थियों के सेवायोजन इत्यादि के बारे में जानकारी दी। टीम ने विश्वविद्यालय के फसल अनुसंधान केन्द्र में चल रहे खरपतवार नियंत्रण के परीक्षणों के अवलोकन के साथ–साथ नन्दपुर एवं गदरपुर में किसानों के खेतों का भी भ्रमण किया तथा वहां सभी स्तर के किसानों से बातचीत कर खरपतवार नियंत्रण में उनके सामने आ रही समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। साथ ही किसानों द्वारा प्रयोग की जा रही तकनीकों व वैज्ञानिकों द्वारा बतायी जा रही तकनीकों के बारे में भी बातचीत की। टीम के द्वारा विश्वविद्यालय में चल रहे उच्च कोटी के परीक्षणों को मॉडल परीक्षण क्षेत्र बताया गया तथा यहां धान की सीधी बुवाई तकनीक में आ रही खरपतवार नियंत्रण की समस्या के समाधान तथा गेहूँ, सोयाबीन, धान, मटर, मसूर आदि फसलों में भी शोध के बाद प्राप्त खरपतवार नियंत्रण के अच्छे परिणामों को किसानों तक विस्तृत रूप में प्रसारित किये जाने की आवश्यकता बताई। अन्य तीनों विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों ने भी पंतनगर में ही अपने यहां खरपतवार नियंत्रण पर चल रहे शोध परीक्षणों के बारे में टीम के समक्ष प्रस्तुतीकरण दिया। प्रस्तुतीकरण के दौरान टीम ने संदेश दिया कि अब मौसम के बदलते परिवेश, कृषि संसाधनों की उपलब्धता तथा पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर अनुसंधान एवं प्रसार किया जाये। साथ ही ऐसी तकनीकों का विकास किया जाये जिनमें रसायनों का कम उपयोग हो तथा जो सीमान्त एवं लघु किसानों के द्वारा भी प्रयुक्त हो सकें। खरपतवारनाशियों के प्रति उत्पन्न हो रही प्रतिरोधकता को ध्यान में रखते हुए फसल–चक्र एवं शाकनाशियों में बदलाव की टीम ने सलाह दी। वातावरण, मृदा एवं मनुष्य के स्वास्थ पर विपरीत प्रभाव डालने वाले रसायनों की संस्तुति न किये जाने के लिए भी टीम ने कहा। पंतनगर में चल रहे शोध परीक्षणों की प्रस्तुति, डा. बी.के. सिंह, डा. एस.के. गुरू एवं डा. शिशिर टंडन ने की।

ग्रामीण परिवार के समग्र विकास पर प्रशिक्षण सम्पन्न

दिनांक 24 से 27 सितम्बर, 2011 तक गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा एक चार–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, 'ग्रामीण परिवार समग्र विकास', का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन महाविद्यालय के मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग में अधिष्ठात्री, गृह विज्ञान महाविद्यालय, डा. रीता सिंह रघुवंशी द्वारा किया गया। समापन समारोह में डा. रघुवंशी ने प्रशिक्षणार्थियों से कहा कि प्रशिक्षण का लाभ तभी होगा जब वे खुद इस प्रशिक्षण का उपयोग अपने पारिवारिक एवं ग्रामीण विकास के लिए करें। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को इस प्रशिक्षण का प्रयोग कर अपने–अपने ग्रामों में स्वरोजगार करने की सलाह दी। इस प्रशिक्षण में ऊधम सिंह नगर एवं नैनीताल जनपदों से आये 16 युवक एवं युवतियों ने हिस्सा लिया। इस चार–दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न लघु व्यवसायों की जानकारी दी गयी। खाद्य एवं पोषण विभाग की डा. प्रतिमा अवस्थी, सह प्राध्यापिका एवं डा. सरिता श्रीवास्तव, प्राध्यापिका ने केक एवं बिस्किट बेकिंग पर प्रशिक्षण दिया। डा. रूचिरा तिवारी, सहायक प्राध्यापिका ने मधुमक्खी पालन के बारे में जानकारी दी। इसके अतिरिक्त डा. ए.के. शर्मा, सह निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय ने टीम वर्क के बारे में व्याख्यान दिया। प्रशिक्षणार्थियों ने बेकिंग एवं मौन पालन इकाईयों का भ्रमण भी किया। इस चार–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन मानव विकास एवं

पारिवारिक अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्षा, डा. आभा आहूजा; गृह विज्ञान प्रसार प्रभारी, डा. प्रतिभा सिंह; एवं सहायक प्राध्यापिका, डा. अनुपमा पाण्डे द्वारा किया गया।

उत्तराखण्ड में धान को कीट व बीमारियों से बचाएं वैज्ञानिक–डा. बी.एस.बिष्ट

विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने वैज्ञानिकों से कहा कि वे इस वर्ष विशेष अभियान चलाकर धान की फसल को कीट व बीमारियों से होने वाले नुकसान से बचाएं। कुलपति ने बताया कि पिछले वर्ष ऊधम सिंह नगर में धान की फसल को विभिन्न कीट तथा बीमारियों से हुए नुकसान के कारण सरकार चिंतित है और इसी परिप्रेक्ष्य में उत्तराखण्ड के कृषि मंत्री के निर्देश पर विश्वविद्यालय द्वारा उत्तराखण्ड में धान बचाओ अभियान चलाया जा रहा है। डा. बिष्ट इस अभियान की समीक्षा कर रहे थे। कुलपति ने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय में नवस्थापित सामुदायिक रेडियो केन्द्र के जनवाणी कार्यक्रम से भी किसानोपयोगी सूचनाओं का प्रसारण किया जाय तथा पंतनगर के कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र में एस.एम.एस. भेजने की सुविधा विकसित कर तथा किसान सहायता केन्द्र के माध्यम से किसानों को सही जानकारी उचित समय पर दी जाय। उन्होंने 12 से 15 अक्टूबर, 2011 को लगने वाले पंतनगर किसान मेले में भी धान की फसल सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी विभिन्न माध्यमों से किसान तक पहुँचाने के लिए कहा ताकि किसान भविष्य में उसका उपयोग कर सकें। विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित धान सुधार परियोजना तथा चावल ज्ञान प्रबन्धन पोर्टल के समन्वयक, डा. एस.एन. तिवारी, ने कुलपति को बताया कि इस वर्ष जून के महीने से ही जनपद के विभिन्न भागों का भ्रमण कर किसानों को रोपाई के समय से ही फसल में लगने वाले कीट एवं व्याधियों की समुचित जानकारी विभिन्न माध्यमों से दी जा रही है। इसके लिए विश्वविद्यालय के फसल अनुसंधान केन्द्र पर परिवीक्षण उपकरण लगाए गये है जिसके द्वारा कीटों के प्रकोप पर निगरानी रखी जा रही है और जैसे ही कीट व बीमारियों के बढ़ने की सम्भावना दिखायी देती है उसी समय समाचार पत्रों के माध्यम से उनसे निपटने की समुचित जानकारी किसानों को दे दी जाती है। साथ ही परियोजना के वैज्ञानिक जनपद के विभिन्न किसान संगठनों, समाजसेवी सस्थाओं तथा दवा उत्पादक संस्थानों से सम्पर्क कर दस से अधिक किसान गोष्ठियां आयोजित कर चुके हैं जिसमें हजारों किसानों ने भाग लिया है। डा. तिवारी ने बताया कि आगामी सप्ताह में 6 अन्य किसान गोष्ठियां आयोजित करना प्रस्तावित है। डा. तिवारी ने बताया कि किसानों तक फसल सुरक्षा सम्बन्धी पूरी जानकारी रंगीन छायाचित्रों के साथ पत्रकों, पोस्टरों तथा बैनरों के माध्यम से भी किसानों को मुहैया करायी जा रही है। वैज्ञानिकों ने उत्तराखण्ड के किसानों को हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मीडिया प्रतिनिधियों की बैठक आयोजित

दिनांक 30 सितम्बर, 2011 को प्रशासनिक भवन में स्थित कुलपति के सभाकक्ष में एक 'मीडिया मीट' का आयोजन किया गया जिसमें रूद्रपुर, पंतनगर, हल्द्वानी, किच्छा आदि स्थानों से आए प्रिंट व इलैक्ट्रानिक मीडिया के प्रतिनिधियों के साथ–साथ विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। इस मीडिया मीट का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की विश्व बैंक पोषित राष्ट्रीय कृषि नवीयन परियोजना (एन.ए.आई.पी.) की उप–परियोजना 'मोबीलाइजिंग मास मीडिया सपोर्ट फॉर शेयरिंग एग्रो इन्फार्मेशन' के अंतर्गत किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने मुख्य अतिथि के रूप में मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि संचार क्रांति के इस युग में मीडिया देश में प्रजातंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में अपनी भूमिका सशक्त रूप से निभा रहा है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि पूर्ण रूप से विकसित मीडिया देश की कृषि व ग्रामीण अंचल के उत्थान में अपना योगदान दे। डा. बिष्ट ने यह भी कहा कि अभी तक मीडिया की नजरों से दूर रहे इस क्षेत्र का विकास मीडिया के सहयोग के बिना संभव नहीं जान पड़ता है। इसी को ध्यान में रखते हुए नवीनतम कृषि तकनीकों को मीडिया के साथ मिलकर किसानों तक पहुंचाने हेतु मीडिया का सहयोग लेने के लिए यह आयोजन किया गया है। डा. बिष्ट ने कहा कि विश्वविद्यालय के 50 वर्ष पूरे हो जाने पर किसानों द्वारा इसकी तकनीकों को कृषि के लिए अधिक उपयुक्त होने की अपेक्षा की जाती है। कुलपति ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों व हाल ही में विकसित कुछ

महत्वपूर्ण तकनीकों के बारे में भी जानकारी देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के भावी कार्यक्रमों तथा 20 वर्षों बाद विश्वविद्यालय के लिए बनाये जा रही सोच 'विजन 2030' के बारे में भी जानकारी दी।

इस परियोजना के पंतनगर केन्द्र के परियोजना अधिकारी, डा. वाई.पी.एस. डबास ने परियोजना के बारे में बताते हुए कहा कि यह परियोजना देश के 9 केन्द्रों में चल रही है जिनमें पंतनगर के प्रसार निदेशालय में भी एक केन्द्र है। उन्होंने कहा कि किसानों तक नयी तकनीकों को पहुंचाने हेतु संचार माध्यमों की क्षमता का समुचित उपयोग करने की सोच अब विकसित हो गयी है जिसकी परिणति इस परियोजना में हुई है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य कृषि संस्थानों के मीडिया के साथ संबंध सशक्त करना तथा जन–संचार के माध्यमों से सूचना प्रसार के क्षेत्र में क्षमता वृद्धि करना है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाताओं ने अपने–अपने विद्यालयों की प्रमुख उपलब्धियों की जानकारी दी। उपस्थित मीडिया के प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए इस आयोजन को सही दिशा में एक कदम बताया तथा आगे भी इस प्रकार के आयोजन करते रहने का सुझाव दिया। उन्होंने नयी कृषि तकनीकों को अपने–अपने संचार माध्यमों में स्थान देने की आवश्यकता को समझते हुए इसमें हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वरिष्ठ सम्पादक एवं सह–परियोजनाधिकारी, डा. नरेश कुमार ने सभी उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया तथा अंत में कार्यवाहक निदेशक शोध, डा. डी.पी. पंत ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

डा. राममूर्ति स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन

दिनांक 7 सितम्बर, 2011 को भारतीय मृदा विज्ञान समिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में डा. राममूर्ति स्मारक व्याख्यानमाला का नौवॉ व्याख्यान कृ ि महाविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग में आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत 'मृदा में गुरू तत्वों द्वारा प्रदू ण तथा उसकी रोकथाम के उपाय' वि य पर प्रोफेसर ए.पी. सिंह भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान एवं कृ ि रसायन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा दिया गया। इसका उद्घाटन डा. जे. कुमार, अधि ठाता कृ ि महाविद्यालय, स्वागत डा. रमेश चन्द्र, विभागाध्यक्ष, मृदा विज्ञान विभाग तथा संचालन डा. श्रीराम, सह–प्राध्यापक मृदा विज्ञान विभाग द्वारा किया गया। व्याख्यान के अंतर्गत डा. सिंह द्वारा भूमि में गुरू तत्वों के प्रदू ण के कारणों एवं उनके रासायनिक नियंत्रण विधियों द्वारा रोकथाम पर विस्तृत चर्चा की गयी, जिससे प्रदूि त मृदाओं का सुधार किया जा सके। व्याख्यान में विभाग के संकाय सदस्यों, छात्र–छात्राओं, कृ ि महाविद्यालय तथा विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के संकाय सदस्यों एवं छात्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

विश्वविद्यालय विद्वत परिषद् ने छात्र श्री रवि कुमार की असामयिक मृत्यु पर शोक व्यक्त किया

दिनांक 19 सितम्बर, 2011 को आयोजित विद्वत परि ाद की बैठक में कृषि व्यवसाय प्रबंधन महाविद्यालय के प्रतिभाशाली छात्र श्री रवि कुमार की एक मोटर साईकिल दुर्घटना में अचानक हुई मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया। विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति ने एक छात्र की असामयिक मृत्यु पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतक के परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की। अधिष्ठाता, छात्र कल्याण डा. अजीत कुमार कर्नाटक ने श्री रवि कुमार की दुर्घटना के उपरान्त विश्वविद्यालय द्वारा की गई कार्यवाही से सभी को अवगत कराया। उन्होंने मिनट–प्रति मिनट की गई कार्यवाही और यथा सम्भव उपचार की व्यवस्था की जानकारी देते हुए बताया कि समस्त उपायों के बावजूद हम अपने विद्यार्थी को नहीं बचा सके। विद्वत परिषद् ने भविष्य में पंतनगर में चिकित्सा सुविधा में अपेक्षित सुधार लाने के लिए भी चर्चा की। कुलपति ने चिकित्सा सुविधा की आवश्यकता पर बल दिया। इस सम्बन्ध में अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा डा. जी.के. सिंह की अध्यक्षता में एक समिति पहले ही गठित की जा चुकी है। कुलसचिव, डा. जे. कुमार ने भरसार एवं रानीचौरी में नवनिर्मित विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण बैठक की कार्यवृत्त से विद्वत परिषद् को अवगत कराया।

कुलपति डा. बी.एस. बि ट के प्रयास से दो लोगों को मिली नेत्र ज्योति

क्षेत्र के एकमात्र नेत्रदान केन्द्र, पंतनगर द्वारा छियालिसवां नेत्रदान करवाया गया। 30 सितम्बर, 2011 को कुलपति, डा. बी.एस. बि ट के संज्ञान में लाया गया कि गदरपुर निवासी श्रीमती राजरानी उम्र 70 व ा की मृत्यु हो गयी है एवं मृत्यु से पूर्व उन्होंने नेत्रदान की इच्छा प्रकट की थी। परिजनों ने उनकी इच्छानुसार पंतनगर नेत्रदान केन्द्र के लिए आग्रह किया। कुलपति, डा. बि ट द्वारा तुरन्त ही आवश्यक कार्यवाही करते हुए नेत्रदान टीम को नेत्रदान करवाने हेतु आवश्यक निर्देश प्रभारी चिकित्साधिकारी, डा. राकेश चन्द्रा को दिया गया। नेत्रदान केन्द्र की डा. इला सिंघल ने श्री साबिर, श्री ओमप्रकाश एवं जिला अन्धता निवारण समिति के

कार्यक्रम अधिकारी, डा. उदय ांकर द्वारा गदरपुर जाकर नेत्रदान का कार्य सम्पन्न कराकर कार्निया दिल्ली के वेणु नेत्र संस्थान में स्थित रोटरी आई बैंक भिजवाया, जहां पर दो नेत्रहीनों को नेत्र ज्योति प्रदान की गयी। उल्लेखनीय है कि पंतनगर में प्रदेश के प्रथम नेत्रदान केन्द्र की स्थापना इस उद्देश्य से की गयी थी कि नेत्रदान के प्रति लोगों को जागरूक कर भारत सरकार के अंधतानिवारण कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया जा सके। इस दिशा में पंतनगर नेत्रदान केन्द्र द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है। पूर्व में मात्र सात दिन के बच्चे का नेत्रदान कराकर इस केन्द्र का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में भी दर्ज है।

प्रो. एच.जे. शिव प्रसाद ने जर्मनी में आयोजित पाठ्यक्रम में प्रतिभागिता की

प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सहायक प्राध्यापक, डा. एच.जे. शिव प्रसाद ने 17–24 सितम्बर, 2011 के बीच जर्मनी के बोकम्प शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय जर्मन स्कूल ऑफ हाइड्रोजियोलॉजी में प्रतिभागिता की। 'अर्बन हाइड्रोजियोलॉजी' विषयक यह पाठ्यक्रम जर्मनी के बोकम्प शहर में स्थित रूहर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया था। डा. प्रसाद ने इस अवसर पर 'हाइड्रोजियोलॉजीकल स्टेटस ऑफ इंडिया' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। डा. प्रसाद अकेले ऐसे भारतीय प्रतिभागी थे जिन्हें यूनेस्को द्वारा इंटरनेशनल हाइड्रोजियोलॉजीकल प्रोग्राम के अंर्तगत पूर्ण स्कॉलरशिप प्रदान की गई थी। भारत के अतिरिक्त 9 अन्य देशों यथा श्रीलंका, ईरान, रूस, ब्राजील, यू.के., इथियोपिया, फ्रांस, सर्बिया एवं जर्मनी के प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में प्रतिभागिता की।

बैकयाड कुक्कुट पालन पर प्रशिक्षण

उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल के रूद्रप्रयाग, जिल–टिहरी गढ़वाल, में जन विकास संस्था (चरिबटिया) द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों के अंतर्गत किसानों के स्तर पर बैकयार्ड कुक्कुट पालन इकाई की स्थापना हेतु ैक्षणिक कुक्कुट फार्म, नगला द्वारा एक माह उम्र के 950 चूजें दिनांक 21.9.2011 को संस्था को उपलब्ध कराये गये। साथ ही संस्था के प्रसार कार्यकर्ताओं एवं मुर्गी पालकों को बैकयार्ड कुक्कुट पालन के विभिन्न पहलुओं पर तकनीकी जानकारी/एक दिवसीय प्रशिक्षण भी दिया गया।

सेवायोजन एवं परामर्श निदेशालय

- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ठण्ैबण ।हण्ध्ठण्ैबण;थ्वतमेजतलद्धध्ठण्ैबण;भ्वतजपबनसजनतमद्धध्डण्ैबण ।हण्ध्डण्ज्मबीण ; ।हतपसण्म्दहहण्द्धध्च्वेज ळतंकनंजम क्महतमम पद ।हतपबनसजनतम डाजहण ंदक ब्ववचमतंजपवद ।दपउंस भ्नेइंदकतलध्क्ंपतल ैबपमदबमद्ध च्वेबपबनसजनतम छात्रों से बायोडाटा आमंत्रित किये गये हैं।
- मै. देवगन सीड्स एण्ड क्राप टैक्नोलॉजी प्रा.लि., सिकन्दराबाद को एम.एस.सी.एजी. छात्रों से प्राप्त बायोडाटा प्रेषित किये गये।
- ठतववाम भ्वेचपजंस वित ।दपउंसे ;प्दकपंद्धए ळीपंइंक द्वारा ठटैब छात्रों से तथा त्ंउचनत क्पेजपससमतल द्वारा एम.एस. सी.एजी. (माइक्रोबायोलॉजी) छात्रों से बायोडाटा आमंत्रित किये गये हैं।
- दिनांक 21 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2011 तक स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों के लिए साफ्ट स्किल डवलपमेंट हेतु एवं जे.आर.एफ./एस.आर.एफ. परीक्षा हेतु कोचिंग क्लास आयोजित की गयीं।

विश्वविद्यालय से 9 कार्मिक सेवानिवृत्त

दिनांक 30 सितम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय से 9 कार्मिक सेवानिवृत्त हुए जिनको प्रशासन भवन स्थित सभागार में आयोजित विदाई समारोह में भावभीनी विदाई दी गयी। विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने सभी सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को फूलमाला पहनायी तथा उनके पेंशन व ग्रेच्युटी प्रपत्र एवं सामान्य भविष्य निधि की राशि के चेक प्रदान किये। वित्त नियंत्रक, श्रीमती अमिता जोशी ने सभी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। डा. बिष्ट ने इस अवसर पर सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों को विश्वविद्यालय में उनके द्वारा किये गये योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि वे आने वाली पीढ़ी को अनुशासन में रहकर शान्तिपूर्ण तरीके से विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए कार्य करते रहने के लिए प्रेरित करें ताकि विश्व प्रसिद्ध पंतनगर विश्वविद्यालय गुरूकुल की तरह कार्य करते हुए देश की कृषि के विकास में और अधिक योगदान दे सके। कुलपति ने सेवानिवृत्त हो रहे सभी कार्मिकों के लिए सुखमय भविष्य एवं दीर्घायु की शुभकामना की। इस अवसर पर सेवानिवृत्त हो रहे श्री अर्जुन प्रसाद ने भी अपने विचार प्रकट किये। सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों में श्री अर्जुन प्रसाद, प्रशासनिक अधिकारी द्वितीय; श्री छट्टू, श्रीमती लाछो, श्री रामा, श्री नबीब, श्री उद्दीन, श्रीमती मेहरून, श्री महेश एवं श्री चौकट यादव कृषि श्रमिक सम्मिलित थे।